बुंदेली लोक गीतों में राम

डॉ रमा आर्य[1]

शोधपत्र सारांश -

भारत का हृदय स्थल बुंदेलखंड जहां कई संस्कृतियों आकर मिलती हैं या कहें कि संस्कृति जहां से शुरू होकर संपूर्ण भारत में फैलती है वह स्थान है बुंदेलखंड यहां की संस्कृति यहां कल लोक साहित्य यहां का सांस्कृतिक वैभव सरलता से किसी का भी मन अपनी और आकर्षित कर ही लेता है यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि बुंदेलखंड का लोक साहित्य संपूर्ण भारत में अत्यधिक समृद्ध है। किसी भी समाज का प्रतिबिंब हम वहां की लोक संस्कृति में व्याप्तम लोकगीतों के माध्यम से समझ सकते हैं। लोकगीतों में लोक संस्कृति अपने मूल स्वरूप में चित्रित होती है या कहीं लोक जीवन का सीधा साधा परिचय लोकगीतों के माध्यम से मिल जाता है यह लोकगीत व्यक्ति की भावनाओं आस्था विचार दर्शन जीवन शैली सब कुछ व्यक्त कर देते हैं। बुंदेलखंड की लोक आस्था का एक मजबूत आधार है भगवान श्री राम। इस भक्ति सागर केंद्र ओरछा है जिसके आसपास राम भक्ति सागर के लोकगीतों में हेलोरे ले रहा है यहां के जन-जन के रगों में श्री राम बसा करते हैं दूर- दूर से लोग ओरछा आते हैं रात भर अपने लोकगीतों के माध्यम से राम जी को ले जाते हैं और सुबह प्रात बेरछा जी (नदी)में स्नान कर राम जी के दर्शन कर पुऱ्य(पुष्य) नक्षत्र को केंद्र मान कर अपना जीवन सुखद बना लेते हैं। यहां के लोकगीतों में राम विभिन्न रूपों में दर्शनीय है।

मुख्य शब्द - बुंदेली लोकगीत, संस्कृति, सभ्यता, परंपरा, श्री राम, लोकजीवन, लोक मान्यताएँ, व्यवहार एवं आचार।

प्रस्तावना -

बुंदेलखंड ऐतिहासिक, साहित्य, सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है बुंदेलखंड में सुविधाओं में भी एकता देखने को सहज ही प्राप्त होती है। बुंदेलखंड की लोक संस्कृति सभी लोक संस्कृतियों से समृद्ध प्रतीत होती है। यहां का लोक साहित्य इतना समृद्ध है कि भारत के

[1] सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), श्री पीतांबरा पीठ संस्कृत महाविद्यालय, दतिया (मध्य प्रदेश)।

अन्यत्र किसी क्षेत्र का साहित्य इतना समृद्ध और प्रसिद्ध नहीं हुआ। यहां लोकगीत , लोक कथा, लोक गाथा , पहेलियां इत्यादि अत्यंत सहजता से देखने को मिलती हैं। लोक जीवन के सुख-दुख उल्लास हर्ष विषाद संघर्ष को अभिव्यक्त करने के लिए लोकगीत सर्वश्रेष्ठ माध्यम प्रतीत होते हैं। यह लोकगीत जनजीवन में इतना रच बस गए हैं की यह सामान्य जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। इन लोकगीतों के द्वारा ही बुंदेली संस्कृति को समझा जा सकता है यह भी कह सकते हैं कि इन लोकगीतों के दर्पण से संस्कृति का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। असल में लोक संस्कृति ही लोकगीतों की कहानी है और इन कहानियों में जनसामान्य का जीवन मानसिक उद्वेग, विचार, अभिव्यक्ति, व्यंजना, संस्कार, संस्कृति सब कुछ सूक्ष्मता से समाहित हैं। यह लोकगीत संक्षिप्त सरल स्पष्ट स्वभाव एक सुंदर संगीत में होते हैं। बुंदेलखंड में प्रचलित लोकगीत बुंदेली जिनके संस्कार, आचार-विचार, उत्सव, अध्यात्मिक, दर्शन इत्यादि का तो परिचय देते हैं साथ ही इन के माध्यम से सामाजिक जीवन शैली का भी साक्षात्कार होता है। इन लोकगीतों का स्वस्थ भाव प्रवणता लालित्य दर्शनीय है।

बुंदेलखंड का केंद्र झांसी से 17 किलोमीटर दूर ओरछा मध्य प्रदेश के निमाड़ी जिले में आता है। यहां प्रभु श्री राम राजा के रूप में विराजमान हैं। प्रभु श्री राम की भक्ति यहां के लोगों की रगों में बसी हुई है ।दूर-दूर से लोग पुख्य नक्षत्र पर (ज्योतिषीय गणना में पड़ने वाला एक विशेष नक्षत्र) यहां आते हैं अपने राजा राम की प्रांगण में पूरी रात गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर अपनी धार्मिक आस्थाओं की पूर्ति करते हैं। उनका प्रयास रहता है कि श्रीराम किसी प्रकार एक नजर उन पर डाल दें। यहां राम जी लोकगीतों में उसी प्रकार समाहित हैं जैसे ब्रज में श्री कृष्ण। राम यहां विभिन्न रूपों में व्याप्त है। बुंदेलखंड वह स्थान है जहां श्री राम अपने भक्तों की भावना से विभोर होकर अवध से ओरछा पधारे। कहा जाता है कि ओरछा की महारानी कुंवर गणेशी श्रीराम के अनन्य भक्त थीं और उन्हीं की भक्ति व प्रेम पर रीझ कर या कहें अपने इस भक्त के हट से विवश होकर श्री राम को ओरछा धाम आना पड़ा। भगवान श्री राम रानी कुंवर गणेशी जी के निवास महल ओरछा में विराजमान हुए और इस तरह बुंदेलखंड के क्षेत्र में श्री राम राजा के रूप में यहां विराजमान हुए एक लोकगीत के अनुसार-

राजा मधुकर शाह की रानी कुंवर गणेश।
अवधपुरी से ओरछा लाई अवध नरेश॥

आज भी यहां की धरती से राम जी के जन्म उत्सव पर उठने वाली बधाइयां हर घर में गाई जाती हैं क्योंकि जब घर में बालक होता है तो वह यहां रामजी का स्वरूप ही होता है और माताएं गांव उठते हैं -

कोसल्ला ले लो बधाई
अवध में लल्ला भये
हिल मिल गा दो बधाई
अवध में लल्ला भये.....

एक भक्तों के द्वारा श्री राम के प्रांगण में लोगों से आवाहन किया जा रहा है कि वे रामचंद्र से यारी करने एक लोकगीत का आनंदमयी अंदाज

रामचंद्र से यारी कर लो
रामचंद्र से यारी
जिने भजे नर नारी
कर लो रामचंद्र से यारी.....
झूठे बेर शबरी के खाए
रस्ता ताकि बेचारी.....
कर लो रामचंद्र से यारी....
रामचंद्र से यारी.....
तुलसीदास भजो रे भगवान
तो आ गई विपदा टारी...
कर लो रामचंद्र से यारी.....

ईश्वर की कृपा से महाराज दशरथ को एक साथ चार पुत्रों की प्राप्ति हुई। राजपरिवार सहित पूरी अयोध्या हर्षातिरेक में डूबी हुई हैं। तो उसने उत्तर दिया खवासन (नाइन) बंदनवार ले जा रही हैं। लोगों ने जिज्ञासावश पूछा -

जो बंदनवारों कहां लयें जाती , जो बंदनवारों.....।

नगर अयोध्या में सुत भये सजनी , राजा महीपतके नाती।

राजा दशरथ के पुत्रा भये हैं रघुकूल जोत उजयार दई बाती।

उजयार दई बाती , उजयार दई बाती। जो बंदनवारों ... ..

रानी कौशल्या की कूँख जुड़ानी " सब सखियन की शीतल भई छाती।

नगर अयोध्या में दान भयें हैं लै लै दान मगन भई सखियाँ।

मगन भई सखियाँ, मगन भई सखियाँ जो बंदनबारों कहाँ लये जाती।

दाई नारा छीनने के पूर्व नेग माँगती हैं। कोई हार दे रही है, कोई तिलरी और कोई मोतियों का थार। परंतु वह तो प्रभु शिशु का दर्शन करना चाहती हैं। यहाँ के लोकगीतों मधुरता का ऐसा समरस चित्र अंकित हुआ है जिससे समझ आता है कि यहां की संस्कृति कितनी समृद्धि और मधुर है।

एक अन्य गीत के द्वारा रानी मैत्रेयी के द्वारा दशरथ जी से दो वरदान मांगने की पूरी कथा वर्णित है। राजा दशरथ अपनी रानी को मनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं पर रानी मैत्रेयी कि जिद हैं कि राम को वनवास पर भेजना है। राजा दशरथ भरत को राजगद्दी देने के लिए तैयार हैं किंतु मैत्रेयी के द्वारा राम को वनवास देने की नहीं किंतु मैत्रेयी अपनी मनमानी कर रही है और वह नहीं मान रही -

राजा तो पौढ़े पलंग पै रानी मलें पीड़ौली' महाराज।

हँस - हँस पूछे राजा दशरथ कैसी धन- अनमनी महाराज।

भौतक ' तो कहिये राजा अन्न धन भौतक लक्ष्मी महाराज।

सूनो अयोध्या को राज अकेली संचत बिना महाराज।

तुम राजा जइयो बाजारै ' संचत भोल ल्याइयों महाराज।

तुम रानी मूरख अजान कहाँ लौं समझाइयें महाराज।

हाटों में हतियां बिकायें संचत नहीं पाइयों महाराज।

नगर को नौवा ' बुलाओं छुरा मँगाइयों महाराज।

चीरौ अभागिन को कूँख राजा गँवारिन कहै महाराज।

काशी के पंडित बुलवाइयों वेद बचवाइयों महाराज।

राजा जनम के गोगिया ग्यावन ' हिरनी मारियों महाराज।

सोने की हिरनी गढुवाय रूपे के गबैलुवा " महाराज।

बन बन देव छुड़ाय संचत तब हुइयें महाराज।

तुम राजा जइयों पहारैं सजीवन ल्याइयों महाराज।

घिस लुड़िया " बँटवाइयों कटोरन छानियों महाराज।

पियो हैं बाँट - बडार तीनई रानी अधन 2 से महाराज भये हैं नों दस मास ललन चार हो गये महाराज।

बाजन लगी आनन्द बधैया सखी गावें सोहरें महाराज।

गौवा के गोबर मँगइयों अंगन लिपवाइयों महाराज।

गजमोतिन के चौक पुरा कलश धरवाइयों महाराज।

काशी के पंडित बुला वेद पढ़ वइयों महाराज।

बारा " बरस के हुइयें राम तब वन खाँ जइये महाराज।

इतनी तो सुन राजा दशरथ अटारियों चढ़ गयो।

महाराज पाहू से गई कौशिल्या पूछें कैसे राजा अनमने महाराज।

बारा बरस के हुई हैं राम वन खों जइहैं महाराज।

वन खो जैहैं तो जान दे फेर घर आहे महाराज।

मोरो मिट गओ बाँझ को नाँव तुम्हारों वंश चलो महाराज।

भगवान राम के जन्म पर दाई को देने के लिए महाराज दशरथ कौशल्या केकई सुमित्रा सभी उपहार लेकर खड़े हैं किंतु दाई को बाहर नहीं भगवान राम की चतुर्भुज रूप में दर्शन चाहिए इसी प्रसंग में एक लोकगीत -

' कैसी मचल रई " दाई अवध में ,

कैसी मचल रई दाई।

सुरंग चूनरी कैकई लयें ठाड़ी , बई " न लैवे दाई।

सोने को हार कौशल्या लयें ठाड़ी , कूलों " मरोर गई दाई।

सोने की तिलरी सुमित्रा लयें ठाड़ी , मुखई " न बोले दाई।

मुतियन थार राजा लयें ठाड़ें , नजर न फेरे दाई।

नरा तुमारों जबई हम छीन दरसन दें रघुराई।

रूप चतुरभुज प्रभु दरसायों , खुशी भई तब दाई।

दरसन लै दाई घर खौ घर - घर होत बड़ाई।

एक और लोक गीत जिसमें राम जी के होने पर दिन सोने के समान प्रकाशमान प्रतीत होता है डाई आकर राजा दशरथ को बधाई दे रही है और कह रही है कि आज दिन सोने का है महाराज जैसा कि हम सभी जानते हैं कि अयोध्या स्वर्णमई है और राम जी के जन्म उत्सव पर सोने के कलश का ही प्रयोग हो रहा है और राजा दशरथ प्रसन्न होकर भाइयों को स्वर्ण आभूषण ही भेंट कर रहे हैं -

आज दिन सोने कौ महाराज।

राजा दशरथ के पुत्र भये हैं।

सोने के कलश धरा ये महाराज।

सोने के सब दिन सोने की सब रातें ,

सोने दिअल उजारे महाराज।

सुरा गऊ के गोबर मंगाये ढिकधर

आंगन लिपाये महाराज।

ननदी जू आइ सांतिया धराएँ

खुसियन नाँच दिखाये महाराज।

शादी की रस्मों के गीत भी बुंदेली लोक भाषा की शान है। शादी किसी भी घर में हो रही है पर यह लोकगीत हर घर लिखी खुशियां बढ़ाने का कारण बनते हैं। भगवान राम की विवाह में तेल चढ़ाने की रस्म का एक सुंदर लोक गीत -

'सो आज मोरे राम जू खों तेल चढत है।

तेल चढ़त है , फुलेल चढ़त है।

सोने कटोरा में तेल भरायो , सो हल्दी मिलाके कैसों झलकत है।

सो आज .....।

कुँवारिन ने मिल तेल चढ़ायों , सो नारीन मंगल गीत मढ़त है।

सौ आज मोरे राम जू खों लगुन चढ़त है।

लगुन चढ़त है आनन्द बढ़त है।

कानन कुंडल मोरे राम जू खों सो हैं।

सो गालन बिच मोतियन लर " सरकत हैं।

केसर खौर मोरे राम जू खों सोहैं।

सो गर बिच गोप " जंजीर लसत हैं।

कंकन चूरा मोरे राम जू खों सोहैं सों हातन * बिच गजरा दरसत हैं।

राम जू के दरशन खों जियरा तरसत हैं।

मों आज मोरे राम जू खों लगुन चढ़त हैं।

कै आज मोरे .....

इस प्रकार जनक जी के यहां दुल्हन (बन्नी) बनी सीता जी की स्थिति देखिये। जब श्री राम बारात लेकर राजा जनक के द्वार पर पहुंचते हैं उस समय का सुंदर चित्र लोकगीतों के माध्यम से किया गया है।द्वारचार के समय यह गीत गाये जाने वाला यह लोकगीत जो मंडप इत्यादि के विषय का सुंदर उल्लेख कर रहा है -

हरे बाँस मंडप छाये

सिया जू को राम ब्याहन आये।

जब सिया जू की लिखत लगुनिया , रकम - रकम कागज आये।

सिया जू को राम ब्याहन आये।

हरे बांस .....

जब सिया जू को चढ़त चढ़ाओं, रकम रकम गहना आये।

सिया जू को राम ब्याहन आये।

हरे बाँस ..।

जब सिया जू की परत भांवरे ब्रह्मा पंडित बन आये।

सिया जू को .....

जब सिया की होत बिदा हैं सब सखियन आँसू आये।

सिया जू को राम .....

हरे बाँस मंडप छाये , सिया जू को राम ब्याहन आये।

एक अन्य लोकगीत के माध्यम से विवाह का सुंदर चित्र अत्यंत मनभावन प्रतीत हो रहा है। इसमें मंडप की सुंदरता, बारातियों के द्वारा चढ़ावा, बांस का मंडप, मोती के चौक, सोने के कलश इत्यादि का मनोहर वर्णन है -

एक समय मुनि जी जा कहैं मोरे रंजन भौंरा।

चलिये जनकपुर गाँव मंडप सियाराम के, मन रंन भौरा।

काहे के मंडप मोरे रंजन भौंरा।

काहे के दोई खंभ जनक - मंडप तरें मौरे रंजन भौंरा।

हरे बांस मंडप बने मोरे रंजन भौंरा।

मलयागिर के खंभ भौरे रंजना भौंरा।

सोहत सीताराम जनक मंडप तरैं मोरे रंजन भौंरा।

कारी घटा घनश्याम सिया है दामिनी मोरें रंजन भौंरा।

(मंडप के नीचे चढ़ावा चढ़ाया जा रहा है अनगिनत अमूल्य रत्नों का ढेर , जिनकी गिनती नहीं की जा सकती हैं)

चली है बारात मंडवा तरें आई अब चढ़ाव की भई तयारीं।

सुरहन गऊ के गोबर मँगाये ढिगधर आँगन लिपाये।

गजमुतियन के चौक पुराये, कंचन कलश उजियार धराये।

पाट पीताम्बर उल्लन - पल्लन " सोने रूपे को पार नौ " पाओ।

चढ़ो है चढ़ाव जनक सुख पाओ भली भांति कन्या पहिराओ।

'ज्योनार' (जेवनार) गीत विवाह के समय गाए जाने वाले लोकगीतो में बुंदेली ज्योनार गीत अत्यंत प्रसिद्ध हैं। ज्योनार विवाह के समय खिलाए जाने भोजन की एक रस्म है जो आज हुई बुंदेली लोक में हर्ष के साथ मनाई जाती है। राम जी को सीता मैया की सखियां भोजन करा रही हैं। किसी सखी ने आलू ,किसी ने पूरी, किसी ने कचौड़ी, किसी ने लड्डू, तो ,किसी ने गुजिया और पेड़े परोसे हैं -

मोरे राम से करो न ररियाँ" जनकपुर की सखियाँ

उनने आतर परसी सो पातर" परसी परस दई दुनियाँ।

जनकपुर ....

उनने रामरस परसो, मिर्चा परसो, परत दई अमियां।

जनकपुर ....

उनने आलू परसे, रतालू परसे, परस दई घुईयां।

जनकपुर ....

उनने पूड़ी परसी, कचौड़ी परसी, परस दई पुईयाँ।

जनकपुर ....

उनने लड्डू परसे, पेड़ा परसे, परस दई गुझियां।

जनकपुर ...

उसी समय एक मजाक हो गया। परोसने वाले ने बाराती पर दोना गिरा दिये जिससे उसके कपड़े खराब हो गये -

माड़े जो परसे झाबक झोला" भर गई पातर उलंग गये दौना।

खाँड़ जो परसी मुठी बगराई, ऊपर घी की धार लगाई।

मैली सी धोती फैर धुआरहो " गरय " से साजन फिर कहो

पाड़ों जेउँत - जेउँत बड़ी रुचि आई, बार - बार हरि करत बड़ाई।

कंकन खोलना -

विवाह के पश्चात दूल्हे के द्वारा दुल्हन का कंगन खोला जाता है इस रस्म को बड़े हुए सुंदर ढंग से मनाया जाता है ये रस्में दूल्हा दुल्हन के साथ साथ परिवार के सभी सदस्य करीब ले आती हैं -

जो नैं होवे धनुष को टोरबो , कठिन कंकन गाँठ छोरबों।

तुमने जनक पुरी पग धारे , शिव के धनुष टोर कै डारे।

जो न होवे मारीच को मारिवों।

कठिन कंकन को . जनकपुरी की नारी आखिर सारीं लगें तुम्हारी।

जिनको बिन हथयारन मारिबों कठिन कंकन ...

वे तो जनकपुरी की नारी हाँसी करें तुम्हारी।

अब तो सीखों सिया को जोरबों।

कठिन कंकन को छोरबो।

वन गमन गीत -

जब भगवान राम को अपने पिता के वचन की रक्षा के लिए वन जाना होता है तो माता सीता और भाई लक्ष्मण जी राम जी के साथ यात्रा पर चल पड़ते हैं। वन की यात्रा की गाए जाने वाला एक बुंदेली लोकगीत जो उस समय की पति को मनोहरी ढंग से प्रकट करता है -

कर घर तन को , चले सियाराम लखन बन को।

राम लखन बन को चले ,

रहा अवध में न कोय हो राम ..

नर - नारी व्याकुल होई रोवे , धीर धरे न कोय।

हो रामा .....।

खुशी भई कैकई मइया को चले सिया राम बन को।

राम लखन तपसी दूनो भइया साधु बने चले जाय मोरे लाल।

जांय . चलत - चलत साधु बागों में पहुंचे मालिन ने पूछी है बात मोरेलाल।

तनक तो छइयाँ बिलमालों मोरे साधू " गजरा पहर चले जावें मोरेलाल।

तुम्हरें छुयें गजरा ना पहिरें मालिन , साधु धरम घट जाय मोरेलाल।

'किलपें अवधपुरी नर नारी , कोमल जनक दुलारी जूँ।

जब माता सीता वन गमन के समय चलते चलते अपने लगते हैं तो माता लक्ष्मण से कहते हैं थोड़ा धीरे चलो -

धीरे चलों मैं हारी लक्ष्मन , धीरे चलो मैं हारी।

एक तो हारी , दूजें सुकुमारी , तीजे मजल कीं मारी।

लक्ष्मण धीरे .....

सँकरी गलियाँ काँट - कटीलें , फाटत हैं तन सारी

लक्ष्मण धीरे ...

गैल " चलत मोय " प्यास लगत हैं , दूजे पवन प्रचारी।

धीरे चलों मैं हारी लक्ष्मन , धीरे चलो मैं हारी।

वट - पूजन गीत -

'नगर अजुध्या की गैल में इक महुआ इक आम।

जे तरैं " बैठे दो जने " इक लक्ष्मन दूजे राम।

लीली बछेरन "लक्ष्मन आइयो, रथ चढ़ " आओ श्रीराम।

सात संखिन के संग में बैठी सीता सपरन " जायें।

बीच मिले दोऊ पाहुँने सीता रही सकुचाय।

सपरखोर घर आई बारी सीता भौजी ने दये पलँग बिछाय।

टेरों " जनक जू के नौवा बारे लक्ष्मन को डेरा दुवाव।

कौशल्या माता श्री राम जी के जनकपुरी से लौटने पर पूछती है कि बेटा तुम्हारे ससुराल कैसी है? वहां सब कैसा है? तुम्हारा आवभगत केसे की? और वहां के लोग कैसे हैं? राम जी बताते हैं कि ससुराल हमारी तीर्थ जैसी है। सास-ससुर गंगा और यमुना की तरह है। रात को दूध की बयारी मेरी सास देती थीं और साले हमें घुड़सवारी कराने ले जाते थे। इस तरह राम जी अपने ससुराल की बढ़ाई अपनी माता से करते हैं -

हँस - हँस पूछे मात कौशिल्या बेटा कैसी बनी ससुरार

सास हमारी गंगा जमना ससुर है तीरथ धाम।

सास हमारी अधिकपियारी देती है दूध बियारी।

सारे " हमारे घुड़ला फिरावे साराजें तपें रसोई।

जैसी मात मढ़ " भीतर लिखीं पुतरिया बैसी है बहु तुमार।

'नौ दस मास बेटा गरभ में राखें वरस दसक लौं सेये।

तीन दिना खों बेटा गये ससुरारे सौं जाय सिराही ससुराल।

'दुहाई खँचों पिता दशरथ की अब न जैहों ससुराल।

अपने राम जी सों रही 10 करत हों बेटा नित उठ जैंओं ससुरार।

बुंदेलखंड में प्रचलित गारी के गीत इसमें हंसी मजाक के माध्यम से नोकझोंक का आनंद लिया जाता है इनके उदाहरण इस प्रकार हैं -

चढ़ावे का लोकगीत (गारी) -

आज श्री सिया जू को चढ़त चढ़ाव।
हरे मण्डप के नीचे जू॥
धन्य धन्य दशरथ ने ऐसा समय पाव।
सेन्दुर की माँग शीश फूल पहिराव
हरे मण्डप .....
तीन खाय घागरे में जरकसी भराव।
मुक्तन को सारी में झलक रयौ भाव
हरे मण्डप .....
बिंदिया अजूब तिलक वेंदा छवि छाव।
कंचन के करण फूल साकरें सजाब
हरे मण्डप .....
ठुसी बीच हीरन को जड़ौ है जड़ाव।
देखो सरमाला को उत्तम सजाब
हरे मण्डप .....
नौ लखा सुहार हिय ऊपर लटकाव।
पांव पोस और दसऊ आंगरौ चढ़ाव
हरे मण्डप .....
दास कहे देख - देख अधिक सुख पाव
हरे मण्डप .....

इस प्रकार जनकपुर की सखी श्रीराम से नौकझौंक कर रही हैं, यहाँ के लोकगीत की झाँकी देखिये। यह भी एक गारी गीत है -

रघुवंशी सुने जइयो गारी, ओसर नोनो बनो॥
महाराजा को भोरे बनाय लये॥ ओसर नोनो .....
अलवेली अवध पति नारी॥ ओसर नोनो .॥
संगै लई ना सेज गये॥ ओसर नोनो॥
कैसे जाये ललनवा चारि॥ ओसर॥
गोरिन के कारे काय भयै॥ ओसर .॥
राजा झगरौ दियो निरबार॥ ओसर॥
कै गुन्डा गढी में कूद गये॥ ओसर॥
कै कामें बनायो मार॥ ओसर॥
अवलौ विनीत बड़ैहि रयै॥ ओसर .॥
मिथिला में भयो निरधार॥ ओसर नोनो बनो॥

राम जी की भक्ति के द्वारा एक गीत किसके द्वारा राम जी के गुणों का बखान किया गया है जो राम जी की शरण में एक बार आ जाता है ईश्वरी के अनुसार उन्होंने सदैव अपने भक्तों की रक्षा की है और सभी कष्टों से उसे मुक्त किया है -

जिनके रामचन्द्र रखवारे, को कर सकत दगारे।
बड़े भये प्रह्लाद पक्ष में, हिरना कुश को मारे।
राना जहर दऔं मीरा खों, प्रीतम प्रान समारे।
मसकी जाय ग्राह की गरदन, गह गजराज निकारे।
'ईसुर' प्रभु ने लाज बचाई , सिरपै गिरत हमारे।

निष्कर्ष -

रामचंद्र जी के प्रति लोगों में व्याप्त प्रेम एवं समर्पण उनकी भक्ति का ही प्रतिबिंब है वहीं रामचंद्र जी उनके जीवन का दर्पण। राम जी पर आधारित बुंदेली लोकगीतों में हम साफ-साफ बुंदेली संस्कृति एवं परंपराओं का दर्शन कर सकते हैं अर्थात यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इन बुंदेली लोकगीतों के द्वारा हम बुंदेलखंड की लोक संस्कृति को आसानी से समझ सकते हैं जो परंपरागत अभी स्वयं को संरक्षित किए हुए हैं। यह समझना कठिन है कि इन लोकगीत के कारण संस्कृति संरक्षित है अथवा संस्कृति का यह प्रवाह लोकगीत को संरक्षित किए हुए है। सरल शब्दों में कहा जाए तो लोकगीत ही किसी भी संस्कृति की सबसे सटीक परिचायक होते हैं। लोक साहित्य की दृष्टि से बुंदेली भाषा स्वयं अन्य संस्कृतियों के बजाय अधिक समृद्ध प्रतीत होती है। यहां के लोग गीतों से भी यही अभिव्यंजना होती है अर्थात यह कहना उचित होगा कि बुंदेली लोकगीतों के श्री राम बुंदेली संस्कृति में प्राण समान है जो यहां की संस्कृति और वैभव को स्वयं में समेटे हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ -

1. https://vimisahitya.wordpress.com/tag/bundeli/
2. बुंदेली भाषा साहित्य का इतिहास, डॉक्टर राम नारायण शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. बुंदेली, आरती दुबे, साहित्य अकादमी, दिल्ली।
4. www.Bundelijalak.com
5. बुन्देली बिबिधा, डॉक्टर गंगा प्रसाद बरसेया, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. बुंदेलखंड समग्र, संपादक हरि विष्णु अवस्थी, माधवराव सप्रे संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल।